VOL- VIII ISSUE- IX SEPTEMBER 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक : नारी की सार्थकता का बोध

प्रो. डॉ किशोर माणिकराव पवार
kishorpawar2345@gmail.com

सारांश -

सुरेंद्र वर्मा का ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ' यह नाटक महारानी शीलवती की स्वाभाविक लज्जा, परपुरुष से मिलन का अस्वीकार, संकोच और तदनंतर कामानुभव से उत्पन्न उन्माद तथा किसी अन्य पुरुष से अपनी पत्नी के समागम में बीतती रात्रि में महाराज ओक्काक की पीड़ा और सूर्य की पहली किरण उगने की प्रतीक्षा में अस्वस्थ मनस्थिति का चित्रण है | एक ओर नियोग के प्रावधान से शीलवती के कामानुभव तथा प्रेय का भाव, निर्बाध - उन्मुक्त समागमानंद की अनुभूति व चाह, शरीर की मांगों का स्वीकार तो दूसरी ओर ओक्काक के लिए अपनी असहायता, सहनशक्ति की - आत्मसम्मान की व एक अपुरुष पति की परीक्षा तथा छटपटाहट है | तो दूसरी ओर संतानप्राप्ति के लक्ष्य का ध्यान करने, सादर होने के लिए महामात्य द्वारा सुझाव के प्रति महारानी शीलवती का विद्रोह है | " उन क्षणों में कहां होता है ध्यान ? उस आवेश और अकुलाहट में... उस उत्तेजना और उन्माद में ... उन सांसों और उच्छवासों में... सारे शरीर में दौड़ती हुई बिजली की तरंग जैसी उस तृप्ति के साथ कौन सी स्त्री है तुम्हारे संसार की, जो होने वाली संतान का ध्यान कर पाती हो ? नारीत्व की सार्थकता मातृत्व में नहीं, महामात्य ! है केवल पुरुष के पुरुष से संयोग के इस सुख में..." 1

<u>शब्द संकेत</u> -

अ) सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक यह कामोत्सव, कामभावना की यात्रा का सूचक शब्दहै | आ) नियोग यह पति की शारीरिक क्षमता के अभाव में संतान प्राप्ति हेतु राजमहिषी को इच्छानुरूप पुरुष चयन का प्रावधान अधिकार देने की व्यवस्था है | इ) नियोग = (सं. पु.) नियोजित या नियुक्त करने की क्रिया, प्रवृत करना प्राचीन भारत की एक परंपरा, जिसके अनुसार पति से संतान न होने पर स्त्री संतानोत्पति हेतु किसी अन्य पुरुष से संभोग कर सकती थी | 2 ई) धर्मनटी राजा की क्षमता से वंशवृद्धि न होने पर अर्थात शासन उत्तराधिकारीप्राप्ति हेतु नागरिक प्रत्याशी समुदाय में से किसी एक पुरुष को समागम हेतु चयन करने, माला लिए मंच पर उतरती स्त्री को धर्मनटी कहा जाता है | उ) उपपति उत्तराधिकारी प्राप्ति के लिए किसी अन्य पुरुष का चयन करने पर उस पुरुष को पति कहा जाता है | ऊ) असूर्यस्पर्श्या ऐसी शीलवान स्त्री जिसका स्पर्श सूर्य ने भी ना किया हो |

संशोधन पद्धती प्रस्तुत विषय पर शोध के लिए हमने विश्लेषणात्मक आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया है |

प्रस्तावना -

भारतीय चिंतन कामविषय अर्थात काम जीवन पर प्रगाढ़ चिंतन करता है , उसे सामाजिक रूप देकर सामयिक बनाता है | इस संदर्भ में हम शिवलिंग का सामाजिक स्वीकार अनुभव करते हैं | कामजीवन की सहज सफलता से सृजन इच्छा की पूर्ति होती है | स्त्री - पुरुष संबंधों का चित्रण सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों, एकांकियों में सूक्ष्मता और रंगमंचीय कलात्मकता से किया है ; *' जिसमें प्रताड़ित, आशंकित, छटपटाती, सामाजिक बंधनों को उधेड़ती काम समस्या, परित्यक्ता, संबंध से युक्त असंबंधों में तनाव तदजनित समस्या ' 3* नियोग प्रावधान से महाराज की मानसिक त्रासदी आदि की कुशल अभिव्यक्ति है |

वैवाहिक प्रतिबद्धता भारतीय समाज तथा संस्कृति में एक सामाजिक पारिवारिक तथा सांस्कृतिक मूल्य माना जाता है | विवाह चाहे जिस किसी स्थिति,

परंपरा, भावना, कर्तव्य से संपन्न हो; साथी के प्रति तन - मन - धन से समन्वित सर्वंकष होता है | इसी एकरूपता की भावना से संबद्ध होता है, जिसे पवित्र, पावन संबंध कहा जा सकता है| आधुनिक समय में पति - पत्नी संबंध इसी प्रकार अभिप्रेत है | परंतु वर्तमान स्थितियों में जब हम विश्व के विभिन्न प्रभावों से प्रभावित होते हैं, ऐसे में पति - पत्नी संबंध की भावना अपने पारंपरिक स्वरूप में सार्वत्रिक तथा शत-प्रतिशत प्राप्त हो पाना असंभव भी है| इसके मूल में पति-पत्नी के जीवन की विभिन्न आपदाएं होती है ; जिनमें से एक असफल काम जीवन होता है|

सहचर की अक्षमता से कामजीवन का अननुभव अपनी मर्यादा में अनापत्ति हो सकती है, परंतु नियोग प्रावधान से महारानी शीलवती को प्राप्त कामसूत्र जीवन का परिचय करा देता है|

शीर्षक की सार्थकता अपने काव्यात्मक एवं प्रभावी संकेतात्मक शीर्षक से नाटककार सुरेंद्र वर्मा के रचनात्मक कौशल का परिचयात्मक संकेत मिलता है | इस सन्दर्भ में रामबजाज गोपाल लिखते हैं, *" इतना लंबा नाम ! 'सूर्य' शब्द के दुहराए जाने में वक्तव्य का बलपूर्वक आग्रह लगा / काव्यात्मकता अपनी जगह / ..../ वैसे तो 'बात एक रात की' कहा जा सकता है / रात के बोझिल अंधकार और रात के साथ जुड़ी दूसरी ध्वनि योन- बिम्ब धारण करती है/ "4*

इस नाटक का आवरण चित्र सारित द्वारा बनाया गया है ; जिसमें केवल दो आंखें और सूर्य का चित्र है| सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक के समयांतराल के लिए प्रतीक्षारत यह आंखें हैं | स्पष्ट रेखाओं से रात्रि का अंधकार, जीवन जगत का विस्तार तथा सगा समागम के बिना दांपत्य जीवन का धुंधलका निरर्थकता प्रतीती का परिचायक है | ऊपर सूर्य की अंतिम साथ ही पहली किरण वाली छवि है | भौतिक जीवन के लिए सूर्यास्त से सूर्योदय की समय सीमा विश्रामदायक है ; वहीं दांपत्य जीवन के लिए सुखदायक है | सूर्य, आंखें व् धूसर रेखाओं से बना इसका आवरण चित्र नाटक के कथ्य को संकेत करता है| यह चित्र सार्थक व समर्थक बन पड़ा है , जो शीर्षक की प्रभुविष्णुता को सहज चित्रित करता है |

इस प्रकार नाटक का यह शीर्षक सार्थक है |

' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' यह शीर्षक विस्तृत अर्थात लंबा है, परंतु उसमें निहित अर्थ संकेत के लिए उचित है | संकेतित समयांतराल हेतु इसका दीर्घ विरोध होना भी आवश्यक है | यह समय महाराज ओक्काक के लिए पीड़ादायक तो महारानी शीलवती की दृष्टि से सुखावह है | नाटक के आद्योपांत यह शीर्षक दर्शक, पाठक को असहज से सहज बनाता है| इस प्रकार नाटक का यह शीर्षक सार्थक है |

कथानक 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' इस नाटक का कथानक कुल आठ पात्रों के माध्यम से मंचित , घटित होता है| इसके कथ्य प्रस्तुति हेतु तीन अंकों का संयोजन है | राजप्रासाद के शयनकक्ष के दृश्य से नाटक का आरंभ होता है| प्रतिहारी महत्तरिका के संवादों से महादेवी की जड़वत व् महाराज की असहज स्थिति, मनस्थिति किसी का सामना करने की नहीं है | यह स्थिति किसी के वश की नहीं है, अत: कोई अनहोनी प्रतीत होती है |

महादेवी विवाहपूर्व अपने समान दरिद्र युवक प्रतोष की वाग्दत्ता थी, जो वर्तमान में बड़े व्यापारी हैं | महाराज उद्यान में बैठे हैं, विगतसाथ रातों से सोए नहीं है | भूखे व् चिंतामग्न हैं | उधर महादेवी का अनुलेपन, स्नान के उपरांत श्रृंगार हो रहा है | महामात्य को महाराज के अस्थिर मन से भय, चिंता है | घोषणा से राजप्रासाद के कर्मचारी अनमने से हैं; अतः देखभाल के अपने कार्यों को नहीं कर रहे हैं |

मर्यादा, संस्कृति से प्रतिबंधित शीलवती संतान प्राप्ति हेतु किसी अन्य पुरुष की एक रात्रि की पत्नी बनने

में संकोचशील हैं | जनता के लिए उत्तराधिकारी प्रदान करने हेतु व्यवस्था उन्हें विधान व पूर्व संदर्भों से अवगत करा लेती हैं | शीलवती को अपने पूर्ववाग्दत्त प्रतोष का वरण करना सुविधाजनक होता है | दोनों में अपने जीवन के संवाद उपरांत मिलन होता है |

अपनी धर्मपत्नी का उपपति अर्थात अन्य पुरुष के साथ एक रात मिलन की स्थिति से उद्वेलित ओक्काक पट बीतने व् सूर्योदय की प्रतीक्षा में विव्हल विह्वल हैं | पुरुष सुख से सद्यपरिचित एवं सिक्त शीलवती तृप्ति से अभिभूत हैं | महाराज ओक्काक, महाबलाधिकृत, महामात्य एवं राजपुरोहित को मर्यादा, धर्म, वैवाहिक बंधन के मिथ्यत्व, आडम्बर का कथन शीलवती द्वारा होता है | तीन रात्रि के वैधानिक प्रावधान को शीलवती भोगना चाहते हैं ; अतः वे निरोधक औषधि का उपयोग करती हैं | यह कामानुभव उनमें वैधानिक प्रावधान से आगे मर्यादा के स्थान पर नए मार्ग खुलवाने की कामना को जन्म देता है | इसके समर्थन में वे सामाजिक सत्य एवं शारीरिक आवश्यकता को व्यक्त करती हैं |

कथ्य - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक का नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने *सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक इस ऐतिहासिक* नाटक के माध्यम से जनता के लिए उत्तराधिकारी की आवश्यकता, उससे संबंधित परंपरा व् प्रावधान, मातृत्व - पुरुषत्व के बीच उद्वेलित दाम्पत्य जीवन तथा सम्मिलन का यथार्थ प्रस्तुत किया है, जिसे निम्नांकित शीर्षकों में इस प्रकार देखा जा सकता है |

क) *संतान प्राप्ति की अनिवार्यता* : राजा हो ना जितना अभिमान, संपन्नता का परिचायक हो परंतु उत्तराधिकारी न देने पर असीम क्लेशदायक है | महाराज ओक्काक अपनी जनता को शासक रूप में उत्तराधिकारी देने में अक्षम हैं | अतः उन्हें अपने नाम को ठोकर मार कर उछल दिए जाने की स्थिति का क्लेश है | परंतु व्यवस्था को उत्तराधिकारी की प्राप्ति से प्रजा और सेना के मनोबल को बढ़ाने की विवशता है | शत्रु राज्यों के कुचक्र से राज्य बच सकेगा | मल्ल राज्य के सामान्य नागरिक को उसका जीवन सहज रूप से चलने का विश्वास मिलेगा | इस प्रकार समस्या से निकलने हेतु महामात्य के अनुसार, *" .../ कभी - न - कभी तो इस समस्या का सामना करना ही पड़ेगा" 5*

ओक्काक की पिता बनने की क्षमता से राजवैद्य ने अब हार स्वीकार कर ली है | अतः शासन तंत्र नियोग प्रथा से उत्तराधिकारी प्राप्ति के संदर्भ और विचार प्रस्तुत करते हैं | जिसके उदाहरण देते हुए महामात्य बताते हैं, *"...| दो वर्ष पहले कुण्डिनपुर और तीन वर्ष पहले अवंती राज्यों में इसी प्रकार उत्तराधिकारी प्राप्त किया गया है |" 6* महाराज की स्वीकृति हेतु उन्हें पांडवों के जन्म का संदर्भ देकर वर्तमान नियोग की संभावनाएं गिनायी जाती हैं | इस प्रसंग में महामात्य, महाबला धिकृत, राजपुरोहित व स्वयं के पिता संबंधी सहज आशंका उपस्थित कर महाराज के लिए नियोग स्वीकृति की पृष्ठभूमि तैयार करने की चेष्टा करते हैं, " नियोग का कारण दूसरा हो सकता है, नियोग का रूप दूसरा हो सकता है | कहीं यह चोरी - छिपे होता है, कहीं धूमधाम से" 7 'अंगुत्तर निकाय' के अनुसार राजा का राजा धर्म है | प्रजा से द्रोह करना 'ऐतरेय ब्राहमण ' के अनुसार निषिद्ध है | ओक्काक के कथनानुसार नियोग प्रथा के प्रयोग को लेकर अमात्य परिषद दुर्विनीत हो गई है | उदाहरण बनकर इतिहास के पृष्ठों में आकर अमृत के घूंट पीना चाहती हैं | परिषद शीलवती को मानसिक रूप से तैयार करने हेतु समुपदेश देती है कि, *"आप को संतुष्ट होना चाहिए कि संयोग से आपके सामने ऐसा रास्ता खुल गया है... कि मर्यादा को भंग किए बिना आप को संतान जैसी निधि मिल सकती है|" 8* नियोग के लिए असहज राजमहिषी को बस एक प्रक्रिया से निकलने भर की बात है,

कहते हैं | उन्हें स्वीकृति के लिए अबोध मुद्रा, घुंघराली अलकेन, दुधिया दांत... नारीत्व की सार्थकता .... मातृत्व की तृप्ति... आदि के कल्पना चित्रों का लोभ दिखाया जाता है | अंततः शीलवती सभा से सम्मोहित होकर नियोग के लिए अनुसरण करती हैं |

ख) पत्नी उपचार बनाम - महाराज ओक्काक के माता-पिता का देहान्त ओक्काक के बचपन में हुआ | विवाह योग्य होने पर उनके विवाह की तैयारी होती है, तब वे राजवैद्य से अपनी स्थिति कहते हैं | राजवैद्य उनकी परीक्षा कर मनोवैज्ञानिक ग्रंथि समझकर रोग का निदान विवाह बताते हैं | नारीत्व से पुरुषत्व के आह्वान पर मनोवैज्ञानिक क्षण में अपने आप परिवर्तन होगा | परंतु सम्मिलन की उत्ताप क्रियाओं से आगे कुछ संपन्न नहीं होता | पांच वर्ष इसी स्थिति को शीलवती तथा ओक्काक अनुभव कर कोई समाधान प्राप्त न कर सके | शीलवती अपना पत्नी धर्म निभाती रहीं | परंतु अब नियोग अनुभव के बाद शीलवती को श्रंगार, मिलनसुख परिचित हुआ है | शीलवती ऐसे सुख को पुनः प्राप्त करना चाहती हैं | जिस पर ओक्काक मर्यादा का स्मरण शीलवती को दिलाते हुए स्वार्थी कहते हैं, तब शीलवती उन्हें खरी-खोटी सुनाती हैं - कि बिना सामर्थ्य के ब्याह जैसा जघन्य पाप कर सकते हो | *" ..../ .... यानी मैं तुम्हारे लिए केवल जड़ी - बूटी थी ? केवल एक उपचार ? तुमने यह नहीं सोचा कि अगर यह चिकित्सा बेकार गई तो इस जीवन्त औषधि पर क्या बीतेगी ? 9* शीलवती ओक्काक द्वारा इस जघन्य अपराध के बाद भी उनसे घृणा नहीं करती | ओक्काक के व्यक्तित्व के दूसरे पक्ष से वे समाधानी हैं |

ग) *शीलवती : पतिनिष्ठा व् नियोग के बीच दोलायमान* - मर्यादा से युक्त हैं | उन्होंने अपने पति ओक्काक को यथास्थिति स्वीकार कर लिया है | उन्हें सारे सांचे को तोड़फोड़ कर नए सिरे से स्वीकार करना कठिन है | शीलवती को कविजन असूर्यस्पर्श्या का विशेषण देते रहे हैं | वही असूर्यस्पर्श्या अब अपरिचित पुरुष से समागम करने चली है| उनके लिए यह रात संग्राम की है; जहां वे अपने को समर्पित कर देंगी | "सारे संस्कारों के जाल छिन्न-भिन्न करके मूल्यों और मर्यादाओं को तोड़कर, अपना पूरा मनोबल इकट्ठा करके मुझे आज इस घड़ी तक पहुंचना था... उसके लिए दूरी की आवश्यकता थी, अनिवार्य थी ...|"10 उन्हें इस स्थिति से उबारने के लिए कोई कुछ नहीं कर सकता; इसका खेद शीलवती को है | इस स्थिति में वे अंतर्मुखी हो कहती हैं , "वेश्याओं के मनोबल की जितनी सराहना की जाए कम है |"11

महाराज की अक्षमता और नियोग प्रथा के संदर्भों से शीलवती को नियोग के लिए तैयार करना अमात्य परिषद के लिए सहज नहीं था | शीलवती के अनुसार इस बात को महामात्य एक स्त्री की दृष्टि से नहीं देख सकते | बिल्कुल अजनबी पुरुष के साथ मिलन उनके लिए उद्वेलित करने वाला है | अनेक तर्क, आवश्यकता , लक्ष्य बताकर उन्हें सम्मोहित कर उनकी स्वीकृति ली जाती है | वे धर्मनटी बन अपने धर्म के पालन के लिए नत होती हैं |किसी से पहली भेंट में संबंध को चरमसीमा तथा भग्नता का अंतिम सोपान कहती हैं |

घ) *शीलवती - तृषिता से तृप्ता* शीलवती अपने जीवन में श्रृंगार सुख से अपरिचित, अनभुक्त हैं | परंपरा से वह मर्यादा,धर्म,शील, वैवाहिक बंधन स्वीकार कर अपने पारिवारिक व सामाजिक जीवन को जीने के लिए बाध्य हैं | पति ओक्काक से शरीर सुख न मिलने की स्थिति को, जीवन के इस रूप को अपना चुकी है | परिषद और व्यवस्था से विवश होकर वे समर्पण सिद्ध हुई हैं | व्यक्तिगत सुख खोज की यात्रा में वे अब निकल पड़ी हैं | इस सुख प्राप्ति के लिए वे प्रदोष से याचना करती हैं | प्रतोष के स्पर्श से सुख का पहला अनुभव करती हैं | आधी रात्रि बीतने के प्रदोष के वाक्य को कठोर वचन कहती हैं | *आधी रात और बची है* उनका यह कथन उनकी

तृषापूर्ति की अपेक्षा दर्शाती है | इस सुख की रात्रि में उन्हें नींद ही नहीं ; मृत्यु भी न आने की भावना व्यक्त करती हैं |

प्रतोष से गंध और आनंद पाकर तृप्ति का मदभरा अनुभव लिए वे राजप्रासाद लौटती हैं | प्राप्त विशिष्ट अनुभवों को ओक्काक से साझा करती हैं | कल तक खोने के आक्रोश व कल पानी का संतोष, सम्मिलन, देने का आवेग, लेने की व्याकुलता, वह साझेदारी और प्रकृति परिवर्तन का दांपत्य जीवन पर पड़ते प्रभाव को समझाती हैं | यहां सुख की स्थिति में स्वाभाविक उद्दंडता भरती हैं | अतः वे ओक्काक से कहती हैं, "...| ... लेकिन तुम्हारे साथ मैं भी इसकी जानकारी से वंचित रहूं ? क्यों ? किसलिए ? " और पांच वर्ष मर्यादा निभाने में उतना संतोष नहीं मिला, जितनी तृप्ति इस एक रात में मिली है |" 12 "महत्तरिका पर झुंझलाती, चक्रवाक् को आहार नहीं मिलता था, चित्रालेखा फाड़-फाड़कर फेंकती थी, द्रुत रागों में वीणा के तार टूटते थे, बेचैन सी शैय्या पर करवटें बदलती (एक पंजा बढ़ाते हुए) और जान लो कि ...तुम्हारा मुंह नोचने का मन होता था..." 13

सुख, सिहरन, रोमांच से अब तृप्त शीलवती भरी गगरी समान छलकी जा रही हैं | कल रात हुई बड़ी क्रांति और तन - मन के बदले इतिहास को, अनुभवों को बांटना चाहती हैं |कामानुभव सिक्त शीलवती अब महामात्य, राजपुरोहित व महाबला धिकृत से उनके रात्रि के शयन कक्षसंबंधी प्रश्न करती हैं | यहां उद्दंड होकर वे पांच वर्ष शील का विचार करने की बात कह कर सबसे स्थिति के स्वीकार की बात कहती हैं | जीवन वह संसार की भाग - दौड़, छल - कपट आदि में रात की वही घड़ियां हैं, जिनमें आदमी अपने को भूलकर थोड़ा सुख पाता है | तब महामात्य मर्यादा की बात करते हैं | परंतु शीलवती के अनुसार इन खोखले शब्दों का जादू टूट चुका है | उनके अनुसार मर्यादा, धर्म ,शील, वैवाहिक बंधन सब मिथ्या है , आडंबर, पुस्तकीय है | उन्हें पुस्तक नहीं जीना , अब उन्हें जीवन जीना है | वे उनके जीवन का यथार्थ व्यक्त करती हैं कि वे ब्याहता स्त्री हैं , परंतु उनके जीवन का कामशास्त्र से क्या संबंध है ? महामात्य द्वारा दिए परामर्श पर वे उन्हें मूर्ख कहती हैं |

तृप्ति के अनुभव से वे बाकी दो रात्रि के अवसर को भोगना निश्चित करती हैं | रात का कोई परिणाम ना हो, इसलिए उन्होंने उपपति से निरोधक औषधि ली है, आगे भी लेंगी | आगे वे मर्यादा पालन न करने का संकेत देती हैं | वे स्वीकारती हैं कि जब शरीर के माध्यम से जीती हूं, तो शरीर की मांगों को कैसे नकार सकती हूं | वे जीवन ली जटिलता, उनकी मांगों की पूर्ति का सत्य समझती और स्वीकारती हैं |

च) ओक्काक : आहत, विवश, विह्वल तथा अधिकारभावना से युक्त महाराज का नाटक के महत्वपूर्ण व केंद्रीय पात्र हैं | अपनी चारित्रिक विशेषताओं से एक सरल व्यक्ति हैं | बचपन में उनके माता-पिता की मृत्यु देख चुके हैं | उनके नाम से अमात्य परिषद ने उनका शासन चलाया था| वयस्क होने पर उन्हें गुरुकुल से राजधानी बुलाया गया , उनके राज्याभिषेक व विवाह की तैयारी हुई | किसी भी राजदुहिता से कुंडली ना मिलने से दरिद्र घर की कन्या से विवाह की तैयारी हुई | तब ओक्काक ने राजवैद्य से अपनी काम कल्पना व निष्प्रभाव का कथन किया | राजवैद्य ने परीक्षा के उपरांत यह निष्कर्ष निकाला कि बचपन में अनाथ होना ,किसी से न घुल - मिल जाना , अंतर्मुखता, निर्णय दुर्बलता, आत्मविश्वास की कमी, ठंडा स्वभाव, अनेक व्याधि आदि से यह स्थिति है | जिसका उपचार विवाह से होगा | सभी रिश्तों का स्नेह पत्नी से प्राप्त हो आत्मविश्वास मिलेगा | पत्नी से पुरुषत्व के आह्वान में पुरुषत्व जागृत होगा | परन्तु विवाह के पांच वर्ष बाद भी ओक्काक में सुधार व परिवर्तन हुआ | सफलता व किसी परिणाम पर ना पहुंचने से व्याकुल, विह्वल व असहाय हैं | " ..../ *(फुटकर) मैं बार-बार पूछता अपने*

शरीर से की इसके बाद क्या होता है" 14 परंतु उत्तर के रूप में केवल अंधकार मिलता | यहां ओक्काक की एक मनोग्रंथि दृष्टव्य है, वे शारीरिक क्षमता न होने पर कोई खेद नहीं रखते , न ही शीलवती का कोई विचार करते हैं | परंतु नियोग से वंश वृद्धि का विचार उनके लिए लज्जाजनक है | उन्हें दुख है कि ल्ल राज्य का शासक नपुंसक होने, गर्भाधान के लिए पति का बाहर जाने की चर्चा सैकड़ों वर्षो बाद होती रहेगी | उन्हें इतिहास व वर्तमान के संदर्भ देकर परिषद उनसे स्वीकृति के प्रयत्न करती हैं | तब वह क्रोधित होकर प्रतिवाद करते हैं | अंततः असहाय होकर नियोग घोषणा की स्वीकृति देते हैं | विवश होकर पत्नी को अधिकार देते हैं, " आपको आज की रात के लिए - सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, उपपति चुनने का अधिकार देता हूं |" 15 उपपति चुनने की सूचना नगाड़े से देने पर ओक्काक व्याकुल हो दयनीय स्थिति में आते हैं | वे अपने को पुरुष मानते रहे | यहां वे शीलवती द्वारा संपूर्ण, पुंसत्व वाले किसी पुरुष के चयन में ईर्ष्या करते हैं | घोषणा से सातवें दिन तक वे स्वीकार नहीं कर पा रहे कि कोई अपरिचित पुरुष उनकी शीलवती का भोग करेगा , उनका समाधान करेगा | इसी भावनिक त्रास से वे दैनंदिन कार्य विस्मृति का अनुभव करने लगे हैं | उन्हें अब निद्रा नहीं आती है | सत्य के स्वीकार में वे सहमत नहीं होते | उन्हें यह बात एक घाव के समान वेदनादायी प्रतीत होती है | जीवन और प्राण रहते इसे स्मरण रहने का मर्मान्तक कारण मानते हैं |

अपनी प्रिय पत्नी का धर्मनटी बनना उन्हें स्वीकार्य नहीं है , "(दोनों कानों पर हाथ रखकर, ऊंचे स्वर में) मत बोलिए मेरे सामने यह शब्द!... मुझे इस शब्द से घृणा है धर्मनटी !"16

राजवंश का नाम बनाए रखने का ऐसा ढंग उन्हें ग्लानि से भर देता है | अपनी शारीरिक कमी को वे आत्मसम्मान के साथ जैसे सूक्ष्म जीवंत तार से, कोमल मर्म बिंदु से जोड़कर निरस्त करने का प्रयास करते हैं |

नियोग के लिए निमंत्रण की हुई घोषणा उन्हें मामन्तक पीड़ा देती है | एक दिन में पचास योजन तक पहुंचने वाले धावकों द्वारा दिया गया समाचार उन्हें आहत करता है | उन्हें यह समाचार चारों ओर सर्व व्याप्त होने की वेदना है |

नियोग की रात वे जीवन की निर्लज्जता का अनुभव करते हैं | उन्हें इस रात ने उनमें प्रतीक्षा की चरम सीमा और सहनशीलता भर दी है | घोषणा से प्रत्यक्ष घटना तक ओक्काक मदिरा का आधार लिए हैं | वे स्थिति व मनस्थिति की चर्चा दासी से करते हैं | वे अपने राजा होने की विडंबना को अभिव्यक्त करते हैं , " मेरा कोई मित्र नहीं , कोई अंतरंग नहीं | राज सिहासन एक अदृश्य दीवार है ,जिसे लांघकर न मैं उस और जा सकता हूं , न उस ओर से कोई इस ओर आ सकता है | ... मैं किसी के अनुभवों से लाभ नहीं उठा सकता, किसी को अपने भेदों का भागीदार नहीं बना सकता, किसी से अपना दुख नहीं बाँट सकता |" 17 उन्हें अपने अपूर्ण पुरुष होने पर खीज के साथ उलझन, पहेली है कि समाज, संसार, साहित्य व वर्जनाओं का उनसे कोई मेल नहीं है | "...| संसार- क्रम का यह एक और अकेला चक्र... अंजाना है मेरे लिए... साहित्य - ग्रंथों के इतने सारे अंश ... वांग्मय के इतने विवेचन... धर्म शास्त्र की वर्जनाएं ... ये बलात्कार... ये आत्मसमर्पण... यह चीरहरण... केवल एक उलझन है मेरे लिए, बस एक पहेली ...! 18

ओक्काक पत्नी पर एकाधिकार की भावना से ग्रसित हैं | वह अपनी पत्नी पर एक रात के लिए किसी का अधिकार स्वीकृत नहीं कर पाते | एक रात के बाद पुनः मर्यादा का बंधन व एकमात्र अपना अधिकार थोपना चाहते हैं | उन्हें अपनी पत्नी के धर्मनटी से कामनटी यह परिवर्तन खीज उत्पन्न करने वाला है |

छ) प्रतोष : उपचारात्मक, विवेकी व सक्षम उपस्थिति : इस नाट्य का एक उपचारात्मक उपस्थितिसम पात्र प्रतोष है | प्रतोष पूर्व काल में एक सर्वसाधारण युवक थे | वह दरिद्र कन्या शीलवती से अनुरक्त थे | आर्थिक विडंबना से वे अपनी प्रेयसी को प्राप्त न कर सकने की स्थिति में अर्थार्जन का निश्चय कर लेते हैं | वे इस स्थिति में अनुभव कर चुके हैं कि आस्था,मूल्य विश्वास, सिद्धांत कहीं नहीं हैं | कहीं कुछ है - तो मुद्रा , व्यक्तिगत सुख | उसी के संग्रह का निश्चय कर वे धन प्राप्ति में छह प्रहर जुटकर मुद्रा राक्षस बन जाते हैं | अब वे सुख दुख से परे होकर सोचते हैं | उनके अनुसार वैभव के अभावों में जो नहीं मिला वह उतना महत्वपूर्ण नहीं है | विवाह उनके अनुसार व्यक्तिगत सुख की परिधि में नहीं आता | शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के और रास्ते उन्हें अब प्राप्त हैं | अतः सद्यप्राप्त शीलवती व उसके कौमार्य में उन्हें कोई रुचि नहीं है | अत: शीलवती को यथावत लौट जाने की बात कहते हैं | यहां प्रदोष में एक सहज सरल प्रेमी एवं समाधानी व्यक्ति की विशेषता दृष्टिगोचर होती है | सुखसाधन से युक्त समाधानी व्यक्ति का परिचय भी होता है | वे आर्थिक विपन्न स्थिति से हुए अन्याय का अब संपन्न बनने पर, मनचाहा सुख प्राप्त होने ; पर काम आतुर नहीं होते | यहां वे एक निरपेक्ष बर्तन का परिचय करा देते हैं | अतः वे पूर्व प्रेयसी को मुक्त कर देते हैं | अपने नाम के अनुरूप बर्तन से संतोष, परितोष का परिचय देते हैं | परंतु शीलवती की याचना व आग्रह से वे शीलवती से एकाकार हो, उसे अपेक्षित व अनभुक्त सुख का परिचय, अनुभव करा देते हैं | शीलवती को नारीत्व का अर्थ, पुरुष से मिलन सुख में नारीत्व की सार्थकता का परिचय उन्हीं से होता है | इस प्रकार प्रतोष की उपस्थिति उपचारात्मक, विवेकी, समाधानी व सक्षम उपस्थिति सिद्ध होती है |

इस प्रकार सुरेंद्र वर्मा का यह नाटक ऐतिहासिक व वर्तमान प्रतिष्ठित वंश की एक प्रथा को प्रकट करते हुए उसकी सार्वत्रिक सार्वकालिक वर्तमानता को, विद्यमानता को प्रछन्न रूप में प्रकट करता है | जिसका प्रकटीकरण ओक्काक शीलवती के संवादों से हुआ है | " हाल ही में दो अभियोग आए थे न्यायालय में... (कुछ घूँट लेता है) व्यापारी नागेश ने अपनी पत्नी का उपयोग किया था | अभियोग अनुदान आयोग के अध्यक्ष पर था ....|"19 " दूसरा अभियोग एक गायक की पत्नी की ओर से था, ...| उसका कहना था कि धनी नागरिक उद्दालक की पत्नी से उसके पति का अनैतिक संबंध था |...." 20 समाज नैतिकता, मर्यादा की बातें करता है| वहां समाज के लिए कोई अपवाद स्वीकार्य नहीं रहता | विवाह से अन्याय ग्रस्त पांच वर्षों तक अपरिचित, अतृप्त शीलवती अब विद्रोह की मुद्रा में सामाजिक सत्य को आधार बनाकर मर्यादा, नैतिकता की पोल - खोल करती है, " .... कितनी युवतियां हैं, जो ब्याह से पहले ही कुमारी नहीं रहती... और मैं ब्याहता हो कर भी ब्रह्मचारिणी थी... लेकिन कब तक ? ... मैं एक मामूली स्त्री हूँ | जब शरीर के माध्यम से जीती हूं, तो शरीर की मांगों को कैसे नकार सकती हूं ?" 21 इस प्रकार यह नाट्य अपवादात्मक स्थिति के न्याय व नारी की सार्थकता का बोध कराने में सार्थक व समर्थ है | नीति, मर्यादा, पवित्र के विचार को भी यह बोध अपवाद के स्वीकार की स्थिति में ले आता है | विशिष्ट विषय की अभिव्यक्ति व रंगमंचीय कलात्मकता का विशिष्ट अनुभव देने में सुरेंद्र वर्मा की मंचीय कुशलता निस्संदेह विशिष्ट है |

सन्दर्भ :

1. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक - सुरेंद्र वर्मा पृष्ठ -७५
2. हिंदी से हिंदी शब्दकोष Online Dictionary
3. नींद क्यों रात भर नहीं आती - सुरेंद्र वर्मा
4. सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक - निदेशक का वक्तव्य पृष्ठ - X

5. वही प्रष्ठ - २५
6. वही पृष्ठ - २७
7. वही पृष्ठ - २८
8. वही पृष्ठ - ४०
9. वही - पृष्ठ ७८
10. वही - पृष्ठ ३९
11. वही - पृष्ठ ७१
12. वही - पृष्ठ ७१
13. वही - ७१-७२
14. वही - ६२
15. वही - ३३
16. वही - पृष्ठ २७
17. वही पृष्ठ - ५१
18. वही पृष्ठ ६०-६१
19. वही पृष्ठ - ५९
20. वही पृष्ठ -५९
21. वही पृष्ठ - ७८

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com